National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 235-237
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कमलकान्त
संस्कृत शिक्षक, शिक्षा विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
सोलन, हिमाचल प्रदेश।

Correspondence:
कमलकान्त
संस्कृत शिक्षक, शिक्षा विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
सोलन, हिमाचल प्रदेश।

रामायण में राज्यतन्त्र

कमलकान्त

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17759325

भूमिका

'रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे'

राम यह नाम आते ही मन में प्रथम चिन्तन आता है आदर्श का, एक ऐसा आदर्श जो भारतीय समाज की नींव है। विश्वभर में मनुषस्य समाज ही नहीं अपितु अन्यान्य समाज में भी प्रशासन दृष्टि परक उदाहरण हमारे सामने आते हैं। यह उदाहरण हमें जीवन के संचालन में राजतन्त्र की महता का गुणगान करते दिखाई देते हैं। परमब्रह्म की सत्ता से ही नियन्ता, पालक, प्रशासक आदि की परम्परा का आविर्भाव हो जाता है। विशेषकर भारतीय राज्यचिंतन में धर्म, नीति और लोककल्याण को शासन का मूल माना गया है। वाल्मीकि रामायण में स्पष्ट उल्लेख है-

धर्मेण राज्यं संचरन् प्रजानां हितमिच्छता[1]।

रामायण, विशेषतः वाल्मीकि रामायण, केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि भारतीय राजतन्त्र का आदर्श ग्रन्थ है। इसमें राजा के कर्तव्य, प्रशासनिक संरचना, न्याय व्यवस्था, युद्ध नीति, नारी सम्मान और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का समावेश है। तुलसीदास, कंबन, कृतिवास और अध्यात्म रामायण ने भी इन विषयों को विस्तार दिया है।

1. राज्यतन्त्र की मूल अवधारणा

रामायण में राज्य को केवल सत्ता का केन्द्र नहीं, बल्कि धर्म और नीति का संस्थान माना गया है। वाल्मीकि रामायण[2]:

"सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च राजा गुणानां प्रथमं विदध्यात्।"

तुलसीदास :

"प्रजा सुखी होइ धर्मनि राता, सब नर चतुर अरु सब गुन गाता।"[3]

राज्यतन्त्र की यह अवधारणा केवल शक्ति नहीं, बल्कि सेवा और मर्यादा पर आधारित है।

राम चित्रकूट में भरत को प्रजा सेवा का उपदेश देकर वापिस भेज देते हैं। भ्रातृप्रेम से परिपूर्ण भरत भी चरणपादूका लेकर प्रजा हित में ही राज्य की देखरेख करने को सन्नद्ध हो जाते हैं। रामायण इस दृष्टि का आदर्श प्रस्तुत करता है, जहां राजा एवं प्रजा के मध्य न्याय नीति और विश्वास का संबन्ध सर्वोपरि है।

राजा धर्मेण प्रजां रक्षति नच सत्तामेवोपभुङ्क्ते।

कम्बन रामायण में राम के शासन को धर्म की जननी कहा गया है इसे तुलसीदास जी ने लोककल्याण और नीति के साथ विस्तृत किया। वील्मीकि जी ने लिखा-

सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च राजा गुणानां प्रथमं विदध्यात्

2. राजधर्म और राजा के कर्तव्य

भारतीय राजतन्त्र की विशेषता यही है कि राज को धर्म से युक्त कर इसे केवल सत्तासुख नहीं अपितु कर्त्तव्यपरायणता का स्वरूप दिया गया है। राजा का धर्म केवल शासन करना नहीं, बल्कि प्रजा के हित में

कार्य करना है। आज हम भाई-भतीजावाद, लोभ, अर्थलोलुपता, स्वार्थपरायणता जैसे कितने ही अवगुणों को किसी नेता में लक्षित कर सकते हैं। रामायण न केवल एक काव्य है, अपितु पूर्णतया सामाजिक आधार को सन्मार्ग में प्रेरित करने तथा प्रजा को राष्ट्रभक्ति हेतु स्वयं के अनुशासन से नियामित करने की भी महागाथा है।

वाल्मीकि रामायण:

"प्रजानां हितकाम्यर्थं धर्मं चरितुमर्हसि।"[4]

तुलसीदास:

"जेहि विधि सुखी होहिं प्रजाजन, सोई विधि करि लाभु सुजान।"[5]

कंबन रामायण में कहा गया है कि राजा का प्रथम कर्तव्य धर्म और प्रजा हित है। कृतिवास रामायण में राजा को "धर्मपालक" और "प्रजा रक्षक" कहा गया है।

3. प्रशासनिक संरचना और नीति

रामराज्य की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यंत सुव्यवस्थित थी। राजा न केवल अपनी प्रजा को आन्तरिक तौर पर अपितु बाह्य दृष्टि से भी पालित करता है। देश की सुरक्षा आन्तरिक एवं बाह्य द्विविध दृष्टि से समानतया विचारणीय होती है। इसके विविध अंगों में कुछ प्रमुख यहां प्रस्तुत हैं-

- मंत्रिपरिषद्: इसकी संरचना का प्रमुख उद्देश्य है कि राज्य के विविध आयामों को सुचारु चलाने के लिए एवं उसकी अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए निरन्तर अवधानकर्ता के रूप में उपस्थित रहे।यह राजा के सभी निर्णयों में प्रजापरक एवं राष्ट्रहितकारी मार्गदर्शन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- गुप्तचर व्यवस्था: राज्य की आन्तरिक एवं बाह्य निगरानी के लिए गुप्तचर का कार्य अत्यन्त संवेदनशील एवं भावनात्मक सुदृढ़ता से युक्त होता है। वही राजा को उचित समय पर जानकारी उपलब्ध करवाकर योजनानिर्माण में आधार बनता है। किसी राज्य का संचालन गुप्तचरों से रहित हो ही नहीं सकता । सुप्रसिद्ध नीतिकार भी गुप्तचर चयल को लेकर सुविस्तृत नियमावली दर्शाते हैं।

- न्यायालय: राज्य में सुशासन को स्थापित करना तथा निष्पक्ष निर्णय विधान को संचालित करना एक महान् राजा की पहचान माना गया है। उचित अनुचित का त्वरित निर्णय ही प्रजा में सन्तोष एवं आत्मविश्वास का निर्माण करता है। सामान्य जन का मुख्य आश्रय तो न्यायपालिका ही होता है। अतः उसका सुव्यवस्थित होना अत्यन्त आवश्यक है।

- सेना और कोषागार: राज्य की सुरक्षा और वित्तीय प्रबंधन का मूल तत्त्व इन्ही में है। राजा को प्रजा,मंत्री, सेना, कोष, दुर्ग के परस्पर संतुलित स्वरूप को बनाए रखना होता है, जिसे सप्तांग राज्य सिद्धान्त कहा गया है। शासक का त्याग, न्यायप्रियता तथा लोकमंगल हेतु निज हित को छोड़ना ही सच्चा राजधर्म है- जैसा राम ने राजकुमार पद का सिद्धान्त स्थापित करते हुए राजाज्ञा को मानकर वनवास स्वीकारा तथा लोककामना पूर्ति के लिए सीता त्याग प्रसंग से प्रजापरक उदाहरण सुस्थापित किया। राजा द्वारा सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय की भावना से विनम्र न्यायपूर्ण और त्यागपूर्ण आचरण, श्रीराम का निजी जीवन एवं राज्यहित में टकराव होने पर निजी हित त्यागना आज की नीतिगत नैतिकता में अनुकरणीय है।

वाल्मीकि रामायण:

"धर्मेण राज्यं संचरन् प्रजानां हितमिच्छता।"[6]

कंबन रामायण में उल्लेख है कि **राजा कोष, बल और मित्रों का संयमपूर्वक उपयोग करे।**

4. न्याय और लोककल्याण

रामराज्य में न्याय और लोककल्याण सर्वोपरि थे। यद्यपि रामायणकाल में राजतन्त्र था परन्तु निर्णय प्रक्रिया में बहुधा मंत्रीमण्डल ऋषिगण तथा जनसहमति के लिए भी भरपूर स्थान था।राज्यनीति एवं सामाजिक सरोकार में सामूहिक सहभागिता का भी उल्लेख मिलता है।

वाल्मीकि रामायण:

"न दुःखं न च रोगं च न चापि व्यसनं क्वचित्।"[7]

तुलसीदास:

"रामराज्य बिनु दोष अघ, दुख नहिं कोउ।"

न्याय व्यवस्था में पक्षपात नहीं था। राजा स्वयं न्याय का पालनकर्ता था।राज्य के प्रत्येक मानव को निर्धारित नियम को राजा कर्त्तव्य पूर्वक पालन करते थे। राजपरिवार भी उन्ही नियमों से बंधा रहता था। लोककल्याण के लिए योजनाएं, दान, सेवा और धर्म का पालन किया गया।

5. नारी और राज्यतन्त्र

रामायण में नारी को केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि नीति, धर्म और मर्यादा की प्रतीक माना गया।

अध्यात्म रामायण:

"या नारी पूज्यते तत्र देवता रमन्ते।"

तुलसीदास:

"सीता मम हृदयाधार, प्रजा हितकारी ममता।"

सीता का वनगमन, अग्निपरीक्षा और त्याग — ये सभी प्रसंग राज्यतन्त्र में नारी की भूमिका और सम्मान को दर्शाते हैं। यह नारी की राज्य के प्रति त्याग भावना का प्रतीक है। कैकेयी का दशरथ के साथ युद्ध में सहायता का प्रसंग नारी को योद्धा अथवा युद्धकला में भी सशक्त दिखाता है। सीता का चरित्र हमें राज्य की आधार नारी का ही बखान कर रहा है। कैकेय से कैकेयी, विदेह से वैदेही तथा कौशल से कौशल्या यह सारे नाम नारी सम्मान के प्रतीक हैं। राम का एकपत्नीव्रत अनुसूया का तपोज्ञान कहां किसी से छुपा है। नारी की समाज संचालन में नायिका के रूप में प्रमुख भूमिका रही है।

6. नेतृत्व-दर्शन

राम का नेतृत्व धर्म, नीति और त्याग पर आधारित था। राम ने जैसे सम्पूर्ण प्रकृति का ही नेतृत्व किया । यह प्रकृति प्रेम भी राजनायक का एक अनिवार्य गुण है। जड़ चेतन सब का ही नेता

राजनायक बने तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होता है। एसे उदाहरण हमें विविध रामायणों से प्राप्त होते हैं।

कृतिवास रामायण:

"राम ने राज्य को तपोभूमि बना दिया।"

रामचरितमानस:

"राम सियहि प्रिय सदा सुभ नेति।"

राम ने व्यक्तिगत सुख त्यागकर प्रजा हित को प्राथमिकता दी। यही आदर्श नेतृत्व है। जिसने वनवासियों को अपने साथ मिलाकर मान दिया, असाध्य लक्ष्यों को साधा वह केवल राम की सर्वश्रेष्ठ नीति ही है। सेना निर्माण से समरांगण के नेतृत्व तक सम्पूर्ण नीति एवं सामरिक दूरदर्शिता के उदाहरण एक कुशल नेतृत्व के अङ्ग हैं।

7. युद्ध और राज्य सुरक्षा

रामायण में युद्ध केवल विजय के लिए नहीं, बल्कि धर्म की रक्षा और प्रजा कल्याण हेतु किया गया।

वाल्मीकि रामायण: **"धर्मसंरक्षणार्थं रावणासुर संहार।"**[8]

तुलसीदास: **"राम भए धर्मभिराज, असुरों का नाश।"**

युद्ध नीति के अनुसार हनुमान का लंका प्रसंग तथा अंगद का बुद्धिचातुर्य के साथ बलप्रदर्शन यह शत्रुकुल में उचित संदेश का वाहक बना। युद्ध नीति में भी धर्म और मर्यादा का पालन किया गया। राम ने शत्रु का सम्मान भी किया — जैसे विभीषण को शरण देना, परम शत्रु रावण को भी उचित सम्मान देना। राम का भील समुदाय के साथ मित्रता राज्य के आन्तरिक संरचना में सुरक्षित कवच का उद्धरण है।

8. शासन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण

रामायण में शासन को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा गया है।

अध्यात्म रामायण: **"राजा विष्णु प्रतिप्रतिनिधि।"**

राज्य संचालन में धर्म, साधना और सेवा का समावेश आवश्यक है। राम ने राज्य को तपोभूमि बनाया, जहाँ शासन और साधना एक हो गए।

9. आधुनिक सन्दर्भ

आज के लोकतांत्रिक भारत में रामायण का राज्यतन्त्र अत्यंत प्रासंगिक है। आज लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जनता ही सर्वोपरि सत्ता है, शासनाध्यक्ष का धर्म है पारदर्शिता लोकल्याण न्यायप्रियता, यह राम राज्य से प्रेरित है।

भारतीय संविधान का मूल मन्त्र है : **"जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन।"**

यह सिद्धान्त हमें पुनः उत्तरकाण्ड एवं भवभूति के उत्तररामचरितम् से स्पष्टतया प्रमाणित होता है। रामराज्य के सिद्धान्त — न्याय, नीति, नारी सम्मान, प्रशासनिक क्षमता — आज भी लोकतंत्र की आत्मा हैं।

राजनेताओं के लिए राम का नेतृत्व आदर्श है। प्रशासनिक अधिकारियों के लिए रामराज्य की नीति मार्गदर्शक है।रिश्वत, भाई-भतीजावाद, पक्षपात, भ्रष्टाचार, व्यक्तिगत संकीर्णता यह रामराज्य के विपरीत हैं। प्रशासन को रामायण के त्याग, आदर्श, सेवा, पारदर्शिता और सत्यनिष्ठा से प्रेरणा लेना अत्यावश्यक है। भरत का त्याग राजनेताओं के लिए अनुकरणीय है,जहां स्वार्थ से बढ़कर नायक के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास का आधार है।

10. निष्कर्ष

रामायण में वर्णित राज्यतन्त्र भारतीय राजनीतिक विचारधारा की आत्मा है। रामायणकालीन राजधर्म सार्वकालिक है तथा आधुनिक शासन प्रशासन में सुशासन पारदर्शिता एवं सर्वजनहिताय का रामायण द्वारा समावेश अत्यन्त प्रासंगिक हैं। नीति निर्माता अधिकारी, जनप्रतिनिधि सबको चाहिए कि नवीन विधानों एवं तंत्रो के साथ प्राचीन आदर्शों को भी आत्मसात् करें तभी वास्त्विक राम राज्य की संकल्पना साकार हो सकेगी। राजकीय सेवा के प्रशिक्षण में राजधर्म के नैतिक एवं व्यवहारिक पाठ शामिल होने चाहिए। नीति निर्माण की प्रक्रिया में जनभावनाओं सांस्कृतिक मूल्यों तथा समावेशिता का ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रशासकों और राजनेताओं की जवाबदेही तय करने के लिए संवैधानिक प्रावधानों के साथ साथ स्वयं अनुशासन की मनोवृत्ति भी होनी चाहिए। राज्य केवल शक्ति का केन्द्र नहीं, बल्कि न्याय, नीति, धर्म और सेवा का माध्यम है।

राजधर्म, लोककल्याण, नारी सम्मान और न्यायप्रियता — रामराज्य के चार स्तम्भ हैं।

राम का नेतृत्व, सीता का त्याग, दशरथ की नीति, भरत की निष्ठा — ये सभी प्रसंग राज्यतन्त्र को धर्म और मर्यादा से जोड़ते हैं।

सन्दर्भ सूची :-

1. वाल्मीकि रामायण — गीता प्रेस, गोरखपुर
2. श्रीरामचरितमानस — तुलसीदास कृत
3. अध्यात्म रामायण — गीताप्रेस संस्करण
4. कंबन रामायणम् — तमिल महाकाव्य
5. कृतिवास रामायण — बंगला संस्करण
6. डॉ. सरोज कुमारी — महाकाव्य रामायण में वर्णित आदर्श राजधर्म
7. डॉ. हरिदत्त शर्मा — भारतीय राज्यतन्त्र का विकास
8. विश्वनाथ त्रिपाठी — भारतीय राजनैतिक चिन्तन परम्परा
9. भवभूति कृत उत्तररामचरितम्

संदर्भ: -

[1]अयोध्याकाण्ड 100.8

[2]अयोध्याकाण्ड 2.21

[3]अयोध्याकाण्ड

[4]अयोध्याकाण्ड 7.4

[5]रामचरितमानस

[6]अयोध्याकाण्ड 100.8

[7]अयोध्याकाण्ड 100.10

[8]युद्धकाण्ड